(181) (P)
678
M

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1261/1012

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 678

891 431
P486 R

राष्ट्रीय पुकार

संग्रहकरता—गौरी शंकर प्रसाद

प्रकाशक—बाबू गौरी शंकर प्रसाद
औसान गंज बनारस ।

मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 678
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

श्रीगणेशाय नमः।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

राष्ट्रीय पुकार।

दोहा

राम कृष्ण कृष्णा भयो, श्री गांधी महराज।
नर लीला करि भक्तहित, करिहहि पुनि प्रभुराज॥
जब जब भारत देश में, किये असुर गण पाप।
तव तव प्रभु अवतार ले, हरेउ कठिन सन्ताप॥

गजल।

भारत के वीरो के तन में जोश अव होने लगे।
देवता नेता वने राक्षस तो अव रोने लगे॥
आज तक हमको सताया हाय परदेशी ने आय।
अव लिया औतार गांधी सुख तो अव होनेलगे॥
हम रूइयां पैदा करैं सुख और देशों के कर।
वस्त्र विनु भारत मरै हा शोक क्या होने लगे॥
धूप जल वर्षा में दुख सह अन्न हम पैदा करै।

ढो ढो के ले जाते विदेशी क्या चतुर होने लगे ॥
हम मरें भूखों कटावें मात गौ को नित्य ये ।
अब चलाकी क्या करैंगे ज्ञान अब होने लगे ॥
भांग गांजा मद्य में हम द्रव्य दे भिक्षक हुए ।
हर तरह से लूट धन नृप नामवर होने लगे ॥
हर मुल्क का उस्ताद था यह देश भारत ही सदा ।
सो हम गुरू मूरख बने मूरख गुरू होने लगे ॥
गऊ मातु ही से दूध घी अन्न वस्त्र होता सदा ।
हाय बिन अपराध कुरबानी तो अब होने लगे ॥
क्यों न हो हिन्दू मुसलमां मिल के एक राय पर ।
गौ मातु रक्षा के लिये तइयार सब होने लगे ॥
जुल्म जालिमां वागका हरगिज न भूलूंगा कभी ।
अब तो गांधी की कृपा से कर्म शुभ होने लगे ॥

दोहा ।

श्री गांधी महराज के, बचन मानि प्रिय भ्रात ।
चरखे का परचार करि, वस्त्र बनाओ तात ॥

गांजा भांग अफीम अरु, चरस शराब को मित्र ।
तज स्वतन्त्र हो देश को, जल्दी करो पवित्र ॥

गजल ।

देश सेवा के लिये हरगिज न डरना चाहिये ।
जान तक अर्पण इसी पर मित्र करना चाहिये ॥
राम कृष्ण पांडवों ने देश सेवा के लिये ।
क्या क्या सहे दुख आपको भी कष्ट सहना चाहिये
बलि हरिश्चन्द्र तथा धर्मात्मा नृप ने सदा ।
गौवोंकी रक्षा है करी तुमको भी करना चाहिये ॥
हम सबों के सामने कितनी कटीं गउ मातु हा ।
धिक्कार मेरी जिन्दगी को अब तो कहना चाहिये
जबसे चर्खे को तजा कपड़ा महंग इतना हुआ ।
मर रहे बिनु वस्त्र कितने अब समझना चाहिये ॥
भारत के दुख को देख कर औतार गांधी ने लिया
हनुमान अङ्गद बनके अब आजाद बनना चाहिये॥
हिन्दू बंगाली मुसलमां मिल गये अब न देरी कुबेर

तन मन से गांधी के बचन पर ध्यान धरना चाहिये

गजल ।

हे मुरारी अब हमारी सुध विसारी किस लिये ।
हैं दुखारी यह गौ तुम्हारी की अबारी किस लिये ॥
दूध दही सबको खिलावे आप जा बन घासखावे ।
ताहू पै हमको सतावे अत्याचारी किस लिये ॥
बच्चे हमारे हलचलावे हो अन्न पैदा सो लोगखावे
ताहू पै हमको कटावे धर कटारी किस लिये ॥
कायर न होती हिन्दुजाती गौवंशपै न विपताआती
लाखों गौवें मारी जाती ये बिचारी किसलिये ॥
हे नाथअब ना बिलम्ब कीजै गौरक्षा कारण औतारलीजै
विनय यह शंकर की मान लीजै यहहै अवारीकिसलिये

भारतदसा ।

बतला दे बड़े भारत, अब क्या है हाल तेरा ।
क्यो हो रहा है ऐसा, चेहरा निठाल तेरा ॥
मुद्दत तलक रहा तूं, महबुब रूप आलम ।

या दिल फरेब बेहद, हुसनो जमाल तेरा ॥
दुनियां में कौन सा है, मशहूर मुल्क ऐसा।
जाता जहां नहीं था, लद लद के माल तेरा ॥
जिसकी वजह से था तूं मशहूर कुल जहां में।
किसने मिटा दिया वह, कसवों कमाल तेरा ॥
हालत को देख तेरी, छाती फटी है मेरी।
दिल को दुखा रहा है, रंजो मलाल तेरा ॥
सन्तान तेरी जबतक, होगी न तेरी रचक।
सालिग न दुर होगा, हरगिज जवाल तेरा ॥

अजादी की दुआ।

खुदा गर मेहर की नजरो अब इरशाद तेरा हो।
तो यह उजड़ा भारत अहा, आबाद मेरा हो ॥
हजारो साल से वेदर्द लोगों के हवाले हो।
न युं औरों के पंजे में वतन बर्वाद मेरा हो ॥
खुंसी रखता है दुनीयां को सभी का अन्नदाता हो।
मगर अफसोस फिर भी यह चमन नाशाद मेराहो॥

कटें बेड़ी गुलामी की तेरी नजरे इनायत से ।
यही फरियाद करताहूँ वतन आजाद मेरा हो ॥
उठते है मुसीवत पर मुसिबत जिसतरह से हम ।
पड़ा पिञ्जरे मे मेरी ही तरह सय्याद मेरा हो ॥

गजल ।

बदलते है नया रंग रोज और रंगत निराली है ।
हमारा दिल दुखाने को बला आफत की पाली है॥
दीये पहले दीलासे और पीछेसे रौल ट विल ।
हमे बर्बाद करने की अजब हिकमत निकाली है ॥
मगर हम भी है हाजिर आपके खातिर दिलोजांसे।
बला हर एक तुम्हारी हमने अपने सर पे डाली है॥
पसीने पर तुम्हारे हमने अपना खूं बहाया है ।
हमारे कत्ल करने को सना सिद्दत संभाली है ॥
सखुन सच्चाहै गौरी का सितमगर सोचले दिलमें ।
सताना बे गुनाहो को नहीं शासन प्रणाली है ॥

हमरी प्रतिज्ञा ।

संसार को देंगे दिखा हम देस पर कुरवान है ।
परवा नहीं कुछ भी हमें हम देस पर कुरबान है ॥
वलिदान होना मैंने सीखा हैं पढ़ो मे आहो ।
चिन्ता नहीं हीवे भसम हम देस पर कुरबान है ॥
लड़ना पड़े यही काल से भी देस भारत के लियो ।
तो जित लेंगे उसको भी हम देशपर कुरबान है ॥
लाखो सहे हम आपद पर मुख न मोड़ेगे कभी ।
पिस पिस के चटनी होयें गे हम देसपर कुरवानहै॥
इस देस भारत के लिये जेल मे जाना पड़े ।
साबित वहां भी हम करेगे देस पर कुरवान है ॥
तोपों की तीछण वाणसे भय खा नहीं सक्तेकभी ।
हम रोक देगें सीना अपना देश पर कुरवान है ॥
स्वाधीन्ता के पक्ष मे हम प्राण देगें हे प्रभो ।
हंसते हुए हम जेल भरेगे देसपर कुरबान है ॥

गजल।

गान्धी बाबा ने फिरसे उजाला कर दिया।
छोटी हस्ती ने कैसा बोल वाला कर दिया॥
झन्डा गाड़ आजादी बना मैदान मे।
दिल हिलाया है उनका का यक तान में॥
एक चर्खे से फैसन का दिवाला करदिया॥
लगे खद्द पहिनने वड़े से बड़े।
जो थे फैसन परस्ती के पीछे पड़े।
कौमी गानों ने सबको मतवाला करदिया॥
जारी सत्याग्रह अब है जाकर क्या।
अपने हाथों नमक कर पै कब्जा कर लिया॥
राग अब तो किसीका तीताला करदिया।
देखिये रंग लायेगी दुनियां ये क्या॥
क्या २ करता जुलुम दुसासन भला।
गौरी नाथ ने ढंग निराला करदिया॥

"श्रीबागेश्वरी प्रेस" दारानगर बनारस सिटी में मुद्रित।

छपगई ! नई नई पुस्तकें !! छपगई !!!

सुनहरी मौका न बिसारिये ! आईये और खरीदिये !! अवश्य खरीदिये!!!

सावन सती उर्फ़ पढने का शार	॥)	स्त्री शिक्षक	॥-)
सावन की सौगात	)॥	नारी शिक्षा दर्पण	।)
प्रेमकान्ता उपन्यास	५)	प्रेमकान्ता सन्तति	५)
कमल कुमारी	२)	जहरीली क़लम	१)
सावनस्वदेश उर्फ़ गौ पुकार	)॥	स्त्री गीत बहार	-)॥
सावन का सरदार	)॥	सावन सन्देश	)॥
नारी धर्म उपन्यास	।)	तिलिस्मीतहखाना उर्फ़	
सावन का सहायक उर्फ़ मेला		कुमारीमधुवसरी पहिला	
घुमनी बेटी बेचवा की कजरी	)॥	खण्ड	॥)
सावन का सखा उर्फ़ महगी		कुअर-कान्ता चारोभाग	॥)
का हाल	)॥	भारत दुर्दशा नाटक	॥)
बड़ीकजरीसावनसितारेहिन्द	≈)	पृथ्वीराज नाटक	॥)
सावन का शहीद उर्फ़ श्रद्धानन्द		हकीकतराय नाटक	≈)
का हाल	)॥	रामलीला नाटक	॥)
सावन की शुद्धी	)॥	विदेशिया नाटक	≈)
सावन संगी	)।	कवित बजरंगविजय	।)
नई कजरी दुनमुनिया	)॥।	कवित्तकुञ्जबहार	=)
सावन राजा	)॥	सवैया शतक	≈)
सावन स्वराज	)॥।	श्रीमतीमंजरीनाटक	॥।)
सावन सत्याग्रह	)॥।	सतीअनसूइया	॥)
सावन स्वदेशभारत	)॥।	अमृत उपदेश	≠)
भारतपेकेटिङ्ग-भजन	)॥	जादू उर्फ़ नज़र बंद	।)

विशेष हाल जाननेके लिये हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगा कर देखिये पता—

गौरीशंकर प्रसाद औसान गंज, बनारस सिटी।

सिर्फ टाइटिल—अर्जुनप्रेस, बनारस में छपा।